P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# एम.एफ.हुसेन ने विभिन्न रूपों को ग्रिड संरचना और विभिन्न श्रृंखलाओं के माध्यम से उभारा–एम. एफ.हुसेन का अध्ययन

**कमलेश व्यास**
सहायक प्रोफेसर,
दृश्य कला विभाग,
यू.ओं.आर,जयपुर,
राजस्थान

**सारांश**

सन् 1955–60 तक एम.एफ. हुसेन अपनी कला की जो निश्चित पहचान बनाई थी उसके विभिन्न रूपों को ग्रिड संरचना और विभिन्न श्रृंखलाओं के माध्यम से उभारा। एम.एफ. हुसेन को उत्कृष्ट कृतित्व के लिए अनेक बार पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1966 में पद्मश्री, सन् 1973 में पद्मभूषण और सन् 1978 में ललित कला अकादमी की रत्न सदस्यता से सम्मानित किया गया। उनके चित्रों पर कई फिल्में बन चुकी हैं।

कला शिक्षा के नाम पर उन्होंने इन्दौर के आर्ट स्कूल में एक वर्ष अवश्य गुजारा किन्तु शेष शिक्षा उन्होंने हजार तजुर्बेवाले आसमान के नीचे ली। कदाचित् शिक्षा का अर्थ उनके समक्ष यही था कि काम करते गए। एक के बाद एक चित्र बनाकर उन्होंने कला में शिक्षित–दीक्षित होने का परिचय दिया। सन् 1937 में वे मुम्बई आए। यहाँ वे फिल्मकार बनने के उद्देश्य से आए थे। सन् 1957 में प्रसिद्ध इटेलियन फिल्म निर्देशक राबर्टो शेसेलिनी भारत पर फिल्में बनाने आए थे पर एम.एफ. हुसेन के चित्रों को देखा तो उन्हें जैसे हिन्दुस्तान मिल गया और उन्होंने उनके चित्रों पर एक फिल्म बनाई। इसके बाद उनके चित्रों पर अनेक फिल्में बनाई जा चुकी हैं। जो ख्याति पिकासों को प्राप्त है वही एम.एफ. हुसेन को भारत में दिल खोलकर मिली है। सन् 1971 में साओं पाउलो द्वैवार्षिकी में उन्हें पिकासो के साथ विशिष्ट कलाकार के रूप में आमंत्रित किया गया और उनकी 'महाभारत' श्रृंखला के तीस चित्र पिकासो के चित्रों के साथ प्रदर्शित हुए। उनके चित्र देश–विदेश के अनेक संग्रहालयों एवं निजी संग्रहों में संग्रहीत हैं। उनके स्वयं के कार्यों पर चार संग्रहालय निर्मित हो चुके हैं।

**मुख्य शब्दः**मकबूल फिदा हुसेन, सिनेमा–होर्डिंग्स, प्रदर्शनी, तैलचित्र, ग्रिड संरचना, शैली, पाश्चात्यकला, प्रोग्रेसिवआर्टिस्टग्रुप, आकृति मूलककला एयूरोपीयचित्रकारों, फिल्मकार, संग्रहालयों, ख्याति, पद्मश्री।

**प्रस्तावना**

आधुनिक भारतीय चित्रकारों में एम. एफ. हुसेन (मकबूल फिदा हुसेन) ने सबसे चर्चित एवं सम्मानित चित्रकार हैं। एम. एफ. हुसेन का जन्म सन् 1915 में 'पंढरपुर' महाराष्ट्र के एक तीर्थ स्थान में एक गरीब बोहरा परिवार में हुआ। जब वे एक वर्ष के थे तब उनकी माँ जैनब का देहान्त हो गया। उनकी कमी एम.एफ. हुसेन ने अपनी सारी जिन्दगी महसूस की है। एम.एफ. हुसेन के दादा अब्दुल हुसेन ने उनकी परवरिश की। पिता फिदा हुसेन इन्दौर की मालवा टैक्सटाइल मिल में टाइम कीपर थे। नौकरी के सिलसिले में पूरे परिवार सहित पंढरपुर से इन्दौर आ गए। बचपन से ही एम.एफ. हुसेन को चित्रकला में रूचि थी। जब वे पाँच वर्ष के थे तब उन्होंने अपने मामा की किताबों में बुराकनुमा उड़ते घोड़े रेखित कर डाले। इससे उनके दादा ने उन्हें बहुत से कागज पेंन्सिल और रबर खरीद दिए।[1] एम. एफ. हुसेन छः वर्ष के हुए तो उनके दादा का निधन हो गया इस कारण एम. एफ. हुसेन बहुत गुमसुम और एकान्त में रहने लगे इसलिए उनके पिता ने यह सोचकर उन्हें बड़ौदा के बोर्डिंग स्कूल में भरती करा दिया कि वहाँ साथी लड़कों के साथ दिल लग जाएगा और पढ़ाई के साथ अच्छे आचरण भी सीख जाएगा। बड़ौदा बोर्डिंग स्कूल में एम. एफ. हुसेन को धार्मिक संस्कार भी मिले जिन्होंने उनके विकास में महतवपूर्ण प्रभाव डाला। भाषा–साहित्य–धर्म–सुलेखन आदि की भी निर्णायक पृष्ठ भूमि एम. एफ. हुसेन को यहीं से मिली। इस समय चित्र–नाटक–खेलकूद सभी में वे समान रूचि रखते थे

पर चित्रकला विषय में सबसे अधिक अंक आते थे और उन्होंने छोटी उम्र में ही हया नाम से शायरी भी शुरू कर दी थी। किशोरावस्था इन्दौर में बीती। इन्दौर के माहौल में एम. एफ. हुसेन को हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही संस्कृतियों को नजदीक से देखने का मौका मिला। उनकी कला के विकास में दोनों संस्कृतियों की विशिष्ट भूमि रही। इन्दौर में पढ़ते हुए साइकिल लेकर वे आस–पास के गाँवों में जाकर घंटो बैठते और कभी पनघट पर तो कभी खेतों में रेखांकन करते। इन रेखांकनों में आकृतियाँ अधिक दृश्य चित्र कम होते, जैसे– लोगों के चेहरे, गाय, बैल, पक्षी आदि। इन्दौर में सत्रह साल की उम्र में एक कला प्रदर्शनी में उन्हें स्वर्ण पदक मिला और उन्होंने आर्ट स्कूल की सांयकालीन कक्षा में जाना प्रारंम्भ किया।

कला शिक्षा के नाम पर उन्होंने इन्दौर के आर्ट स्कूल में एक वर्ष अवश्य गुजारा किन्तु शेष शिक्षा उन्होंने हजार तजुर्बे वाले आसमान के नीचे ली। कदाचित् शिक्षा का अर्थ उनके समक्ष यही था कि काम करते गए। एक के बाद एक चित्र बनाकर उन्होंने कला में शिक्षित–दीक्षित होने का परिचय दिया। सन् 1937 में वे मुम्बई आए। यहाँ वे फिल्मकार बनने के उद्देश्य से आए थे। प्रारंम्भ में उन्होंने सिनेमा–होर्डिंग्स के पेन्टर के रूप में काम किया, जिसके लिए उन्हें चार आने प्रति वर्ग मीटर मिलता था। सन् 1941 से वे बच्चों के लिए खिलौने व फर्नीचर बनाने वाली फेनटेसी फर्म में नौकरी करने लगे। यहाँ वे बच्चों के खिलौने एवं फर्नीचर डिजाइन करते और जब वक्त मिलता तब चित्र बनाते। उनके ये चित्र प्रसिद्ध कला–समीक्षक श्लेसिंगर, जो एम. एफ. हुसेन के संघर्षमय जीवन के दौरान प्रथम कला संरक्षक थे, दस रूपये में खरीद लेते थे। उस समय दस रूपये पाकर जो खुशी होती थी अब लाखों रूपये पाकर भी नहीं होती।[2] इसी वर्ष फजीला बीबी से निकाह कर वह ग्रांट रोड में बदरबाद के 10 x 10 फुट के किराए के कमरे में रहने लगे और कला जगत में पहचान बना सकें इसके लिए भी प्रयत्नशील रहने लगे। सन् 1947 में सुजा के प्रयत्नों से वह प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप से जुड़ गए और उन्होंने नौकरी छोड़ दी तथा पूरी तरह चित्रण कार्य में जुट गए। यहीं से उनका कलाकार का वास्तविक जीवन प्रारंम्भ हुआ। इसी वर्ष उन्होंने बोम्बे आर्ट सोसायटी की वार्षिक प्रदर्शनी में भाग लिया और पुरस्कार भी प्राप्त किया। यह पुरस्कृत चित्र ग्रांट रोड के ईरानी रेस्टोरेन्ट की मार्बल टेबल पर बैठे हुए तीन साल के शमशाद (एम. एफ. हुसेन का दूसरा बेटा) का था जो उन्होंने वहीं शमशाद को मॉडल बनाकर वाटर कलर में बनाया था। एम. एफ. हुसेन को मुम्बई के कला जगत में जिस वर्ष प्रतिष्ठा मिली वह भारत की स्वतंत्रता का वर्ष था। एम. एफ. हुसेन ने बहुत जल्द ही स्वातंत्र्योत्तर भारतीय कला में एक ऐसी जगह बना ली जहाँ थोड़े से कलाकार ही उनकी बराबरी पर थे। एम. एफ. हुसेन, सुजा, रजा सरीखे कलाकारों के नजदीक आए। सुजा की तरह एम. एफ. हुसेन वाचाल एवं बौद्धिक नहीं थे लेकिन अपने इन साथियों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। सुजा के साथ सन् 1948 में वे राष्ट्रपति भवन की प्रदर्शनी देखने दिल्ली गए। इस प्रदर्शनी में प्रागैतिहासिक काल से लेकर सन् 1948 तक का कार्य एक साथ प्रदर्शित किया गया था। इस प्रदर्शनी से एम.एफ. हुसेन काफी प्रभावित हुए। मुख्यतः बसौली शैली के रंगों, गुप्तकाल की मूर्तिकला और भारतीय लोक–कला के सरल रूपों से सुजा को कला की अच्छी समझ थी। इस कारण यात्रा के दौरान उन्हें सुजा से कला के बारे में काफी बातें जानने को मिलीं।[3]

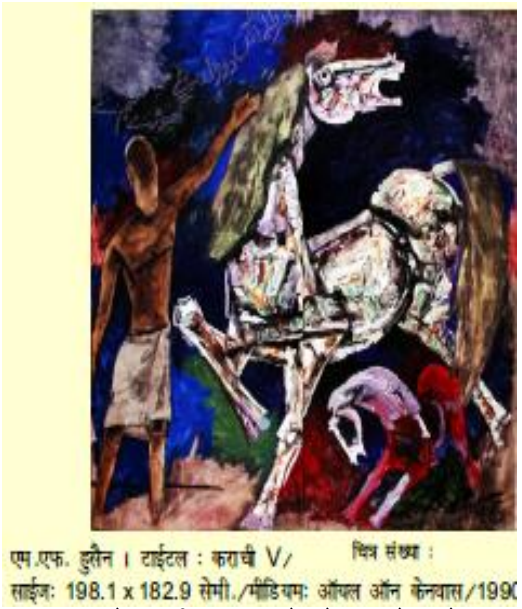


अपने साथी कलाकारों के सहयोग से पाश्चात्य कला का अध्ययन किया। पश्चिम के प्रभाव से उन्होंने आधुनिक तकनीक में चित्रण किया किन्तु उन्होंने विषय भारतीय समसामयिक जीवन तथा पौराणिक कथाओं से लिए। पश्चिम के प्रभाव के बारे में एम. एफ. हुसेन स्वयं कहते हैं, ''बाहर का प्रभाव पड़ना एक हद तक इसलिए भी लाजमी था कि कला पर जितना भी साहित्य उपलब्ध था वह सब विदेशी था। हमारी कला परम्परा और अपनी कला जरूरतों के लिए न कोई साहित्य था और न आज

है।[4] यह बात उन्हें कचोटती है। एम. एफ. हुसेन ने इस पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की है कि हम अभी भी सब पश्चिम के मापदण्डों से अपनी कला जरूरतों को नापते हैं। पैग प्रदर्शनी की पहली कला प्रदर्शन का आयोजन मुम्बई आर्ट सोसायटी में 7 जुलाई 1949 को किया गया जिसका उद्घाटन मुल्कराज आनन्द ने किया था। इस प्रदर्शनी में सभी छः सदस्य कलाकारों सुजा, रजा, आरा, हुसेन, गाडे और बाकरे की कलाकृतियाँ प्रदर्शित थीं। साथ ही एक प्रदर्शनी उन कृतियों की भी हुई जो मुम्बई आर्ट सोसायटी ने अस्वीकृत कर दी थी। एम. एफ. हुसेन भी इस प्रदर्शनी में सम्मिलित थे। इन नवीन कलाकारों को विरोध के साथ समर्थन भी मिला। होमी जे. भाभा, श्लैंगर, आर. वॉन लीडन आदि ने उनके काम में न केवल दिलचस्पी ली, बल्कि चित्र भी खरीदे। पत्र– पत्रिकाओं का भी सहयोग मिला और कला की दुनिया में भी नए तरह के विचार आने शुरू हुए। ब्रिटिश स्कूली शैली की जगह फ्रांसीसी शैली का काम आकर्षण का केन्द्र बना, जो अपनी प्रकृति में ब्रिटिश स्कूली शैली के विरूद्ध था। सन् 1950 में एम. एफ. हुसेन ने अपनी प्रथम एकल प्रदर्शनी मुम्बई में आयोजित की। उनकी प्रदर्शनी को

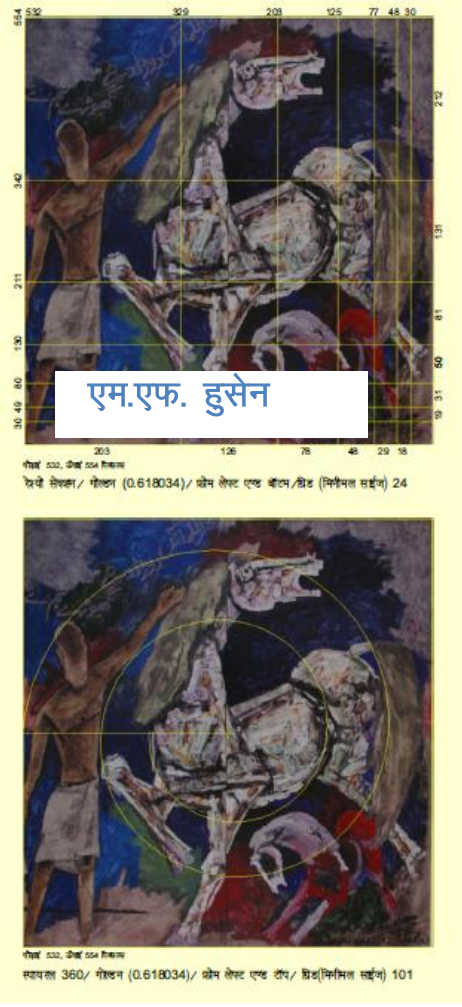


काफी सफलता मिली और उन्हें कई संरक्षक और प्रोत्साहक भी मिले। इस समय तक एम. एफ. हुसेन शैली पर कम व चित्र विषय पर अधिक ध्यान देते थे। भारतीय की लोक कला और मध्यकालीन चित्र परम्परा का प्रभाव उन पर हावी था पर प्रस्तुतीकरण में रंग और रेखाओं के प्रयोग का तरीका पिकासो से प्रभावित था। सन् 1953 में एम.एफ. हुसेन यूरोप यात्रा पर गए। इस दौरान वे पाश्चात्य कलावादों से परिचित हुए। पाश्चात्य कलाकारों पॉल क्ली और पिकासो से काफी प्रभावित हुए। अपने ऊपर पिकासो के प्रभाव को एम. एफ. हुसेन ने स्वीकार भी किया है, एम. एफ. हुसेन के अनुसार 'पिकासो क्रिएटेड द लेंग्वेज ऑव मॉर्डन आर्ट'। एम. एफ. हुसेन पर लिखी गई अपनी किताब में लेकर रिचर्ड बार्थोलोमियों ने स्वयं लिखा है कि एम. एफ. हुसेन ने इसी 'लेंग्वेज ऑव मॉडर्न आर्ट' का अपनी रचनाओं में प्रयोग किया है। स्वयं कलाकार की कलाकृतियाँ इसका सबसे बड़ा प्रमाण हैं लेकिन इससे भी पहले पॉल क्ली का प्रभाव पड़ा।[5]

यूरोपीय चित्रकारों से ताज़ी प्रेरणा लेकर भारत लौटे एम. एफ. हुसेन पूरे जोश के साथ चित्रण में लग गए। इस समय की इनकी कृतियों में ताजी–नई प्रेरणा का प्रतिबिम्ब साफ झलकता है जो स्वाभाविक भी है और यही समय उनके कृतित्व के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भी रहा। 1955 में उन्होंने अपने 10 x 10 के कमरे में 15 फुट लम्बी महत्वपूर्ण कृति 'जमीन' की रचना नेशनल आर्ट एक्जिबिशन, दिल्ली के लिए की। इस चित्र में उन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन का परिदृश्य दर्शाया है जो कई खण्डों में विभाजित है जिसमें छोटी–छोटी कई कहानियाँ हैं, जैसे– एक खण्ड में विशाल काला सूर्य एक बैठी हुई नग्न स्त्री की ओर बढ़ रहा है उसके पैरों के बीच एक बच्चे की विकृत आकृति है। पृष्ठभूमि में कृष्ण की कहानी या महाभारत का मार्का और क्लासिकल नैरेटिव आर्ट है। लाल रंग से किया प्रभावशाली अंकन और कल्पनाशीलता का अद्भुत उदाहरण है यह चित्र। इस कृति पर उन्हें सन् 1955 में ललित कला अकादमी की प्रथम राष्ट्रीय प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। 50 के दशक के अंतिम वर्षों में उन्होंने भारतीय और पश्चिम की कला की टकराहट को अपनी कला में अपेक्षाकृत बेहतर ढंग से आत्मसात् किया। यह कहना गलत न होगा कि इस समय एम. एफ. हुसेन ने सर्वश्रेष्ठ चित्रों की रचना की।'मकड़ी और आदमी के बीच' सन् 1955 'दो स्त्रियों का संवाद' सन् 1957, 'मकड़ी और लैम्प के बीच' सन् 1958, 'दुपट्टों में तीन औरतें' सन् 1958, 'घोड़ा' सन् 1958, 'नीली रात' 1959 आदि कुछ ऐसे चित्र हैं जो हुसेन की कला की केन्द्रीय बनावट को उभारते हैं। रचनात्मक दृष्टि से एम. एफ. हुसेन इस दौरान सक्रिय ही नहीं थे, बल्कि सार्थक भी थे।

अमूर्तता के घिसे–पिटे तथा चालू मुहावरे में परिवर्तित हो जाने के बाद अंतर्राष्ट्रीय कला जगत में आकृति फिर से महत्वपूर्ण हो उठी है। यहां तक कि यह प्रवृति अब फोटो–यथार्थवाद के सीमांतों को भी छूने लगी है। जहां एक तरफ अभिनव तकनीक और यांत्रिक युक्तियां इसमें सहायक सिद्ध हो रही है, वहीं दूसरी तरफ

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राच्य धारणाओं की सांकेतिकता तथा सारगर्भिता ने भी इसे पर्याप्त मदद दी है।

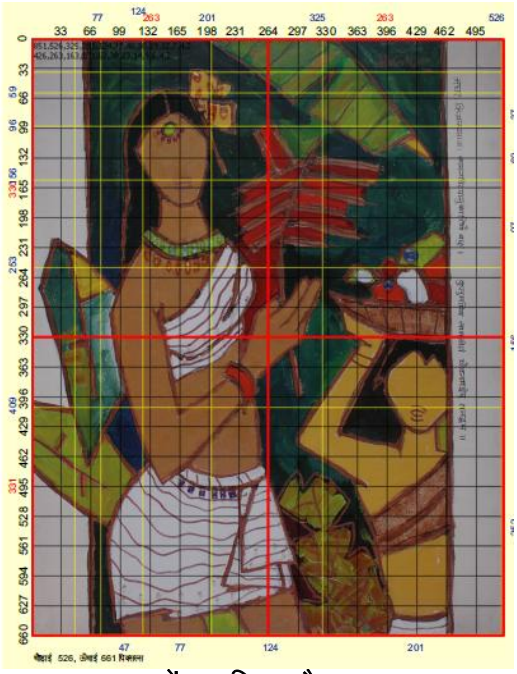

**कला इन चार गुणों का मिश्रण है**

प्रतिभा, तकनीक, स्वभाव और अभिरूचि। चारों गुणों के सुंदर संयोजन से पांचवां गुण जीवंतता, स्वयं उपजता है। इससे कला प्राणवान हो उठती है। ऐसी कला के बारे में आकृतिमूलकता या अमूर्तता की बहस बिल्कुल निरर्थक है। जो व्यक्ति कला को शिल्प सृजनशीलता और संप्रेषण इन तीनों स्तरों पर ग्रहण करता है, वह सौंदर्य, बुद्धि और तकनीकी तत्वों से पूरी तरह लैस माना जा सकता है और ऐसा व्यक्ति आज भी जीवंत भाषा में वह सब कहने का अधिकारी है जो कहा जाने योग्य है। लेकिन भारत तथा अन्य देशों में आम रूख नवीनता को अभिव्यक्ति देने के स्थान पर बिक्री योग्य अभिव्यक्तियों को प्रश्य देना रहा है। कला को अब चुनौती के रूप में न लेकर एक व्यवसाय के रूप में लिया जाता है।[6]

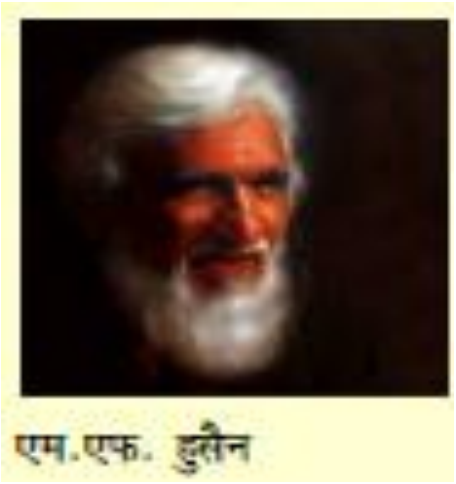


महानगरों तथा नगरों में जिस कला का सृजन व्यापक रूप से हो रहा है, उसमें अधिकतर व्यापारिक उद्देश्य काम कर रहे है। जो फैशन से परिचालित होने की जगह अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है वे अपनी सार्थकता बाहरी प्रभावों से निर्धारित नहीं करती वरन् उनमें निजी अनुभव की गहराई, अपने सामाजिक संघर्ष की भागीदारी का अहसास अपनी सांस्कृतिक परंपरा के सजीव संपर्क की लालसा स्वयं उद्भूत होकर नयी दिशा का अर्थपूर्ण संकेत देने लगती है। हर देश की कला किसी न किसी वाद का आश्रय लेकर ही सार्थक सृजन करे यह आवश्यक नहीं है। अपनी संस्कृति और अपनी जनता से जुड़ कर किसी ऐतिहासिक आवश्यकता या उपलब्धि की प्रेरणा भी उसे नये शिल्प की दिशा में गतिशील कर सकती है। मानव मात्र की चिंता, मानवता के प्रति व्यापक सह–अनुभूति तथा कल्याण–कामना, उसकी विरोधी शक्तियों से जूझना और आत्माभिव्यक्ति की उच्चतम स्थिति व कला के माध्यम से पहुंच पाना हर रचनाकार का अभीष्ट होता है।[7]

सृजनात्मक कलाओं का व्यापारीकरण एक विश्वव्यापी घटना है लेकिन इसके बावजूद भारत में अत्यंत उत्कृष्ट आकृतिमूलक कला के पनपने के बहुत स्पष्ट और सशक्त प्रमाण मौजूद है। इसका सारा श्रेय बंगाल शैली, बंबई के प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, कलकत्ता ग्रुप मद्रास की प्रोग्रेसिव पेंटर्स एसोसिएशन और दिल्ली शिल्पी चक्र के कलाकारों द्वारा रखी गयी ठोस बुनियाद को दिया जाना चाहिए। यामिनी राय से जतीन दास तक सभी कलाकारों ने विश्वसनीय दृष्टि, शैली, तकनीक और गहरी प्रतिबद्धता के साथ आकृतिमूलक कला को अभिव्यक्ति दी है जो अमूर्तता के ठीक विपरीत सदा सार्थक रही है। सवाल उठता है कि कलाकार अमूर्तता के माध्यम से क्या कह सकता है?[8]

भारत में ऐसे बहुत कम कलाकार है और इनमें प्रसिद्ध कलाकार भी शामिल हैं जो आधुनिक मुहावरे का इस्तेमाल उस आत्मविश्वास तथा विश्वसनीयता से कर सकते है, जिस तरह सूजा करते है। इसलिए आश्चर्य नहीं होना चाहिए अगर हुसैन सूजा को अपना कला गुरू स्वीकार करते हो। अपनी कृति को शक्ति और दृष्टि से समृद्ध करने के मामले में हुसैन एक अन्य महत्वपूर्ण कलाकार है। उनके विषय पूरी तरह भारतीय है और वह अनुभूति तथा अंतदृष्टि के साथ। उनका पुनर्सृजन करते हैं। उनका मुहावरा लोक कला से लिया हुआ है और उनमें वैसी उष्मा तथा स्पष्टता भी है। उनके समृद्ध रंग गांभीर्य और समन्वय से परिपूर्ण हैं। उनका विरूपण साधन भावावेश और ऐट्रिकला से उद्वेलित रहता है और भारतीय संवेदना के अनुकूल लगता है। के.जी. सुब्रहमण्यम बंगाल शैली के संवेदनशील और कल्पना प्रवण कलाकार है, रेखा और रंगों के इस्तेमाल में उन्हें महारत हासिल है और इन दोनों का प्रयोग वह भरपूर मधुरता तथा सुसंस्कृत ढ़ंग से करते है। उनकी रेखाओं में सौम्यता है तथा वे प्राच्य गुणों से युक्त है। जिससे वह और भी भव्य हो उठती है। के.के. हब्बार अलौकिक लय के एक अत्यंत समर्थ कलाकार है। वह ऐसे कलाकार है जो आकृतियों को नृत्य करता हुआ दिखा सकते हैं और इसी से आकृतिमूलक कला पर उनके

सहज तथा पूर्ण अधिकार को समझा जा सकता है। हालांकि वह आजकल ब्रह्मांडीय प्रतीकों वाली गैर–आकृतिमूलक संरचनाओं पर काम कर रहे हैं किंतु वह मूल रूप से आकृति मूलक कलाकार ही है।[9]

एम.एफ. हुसेन ने तैलचित्र, जलरंग, म्यूरल आदि विभिन्न माध्यमों में लोक–जीवन को उतारने की कोशिश की। 1957 में उन्होंने एयर इण्डिया के लिए हांगकांग, बैंकाक, ज्यूरिख तथा प्रयोग में म्यूरल बनाए। सन् 1959 में टोकियो के अन्तरराष्ट्रीय द्विवार्षिकी में उन्हें पुरस्कृत किया गया और उन्होंने देश–विदेश में अनेक प्रदर्शनियाँ की। बाद में हुसेन ने रागमाला, नृत्य, महाभारत, रामायण, राजस्थान, कश्मीर, बनारस, मैसूर, मध्यपूर्व, आत्मचित्र आदि अनेक श्रृंखलाओं को अपनी कला की प्रेरक शक्ति बनाया। सन् 1955–60 तक एम.एफ. हुसेन ने अपनी कला की जो निश्चित पहचान बनाई थी उसके विभिन्न रूपों को ग्रिड संरचना और विभिन्न श्रृंखलाओं के माध्यम से उभारा। एम. एफ. हुसेन ने आधुनिक कलाकार की छवि को लोकप्रिय बनाया। उनकी कला आधुनिक भी है और उसे भारतीय जीवन से आसानी से जोड़ा जा सकता है। एम. एफ. हुसेन के चित्रों में नारी अपना विशेष स्थान बना रही है और विविध रूपों में उभरी है। एम. एफ. हुसेन ने प्रायः नारी रूपाकारों का सादगीकरण किया है। अपने अन्य समकालीन चित्रकारों की तुलना में एम. एफ. हुसेन के चित्रण में उभरी नारी के विविध रूपाकार और ग्रिड पृष्ठभूमि भारतीय वातावरण के अधिक समीप लगते हैं।

भारतीय क्षेत्र में मथुरा संग्रहालय की स्थानक उन्नत वक्षयुक्त नारी की प्रतिमा ने उन्हें आकर्षित किया है। उनका मानना है कि स्त्रियाँ कष्ट झेलती हैं, जन्म देती हैं, उनके नेत्रों में दया और सीने में प्रेम है।[10]

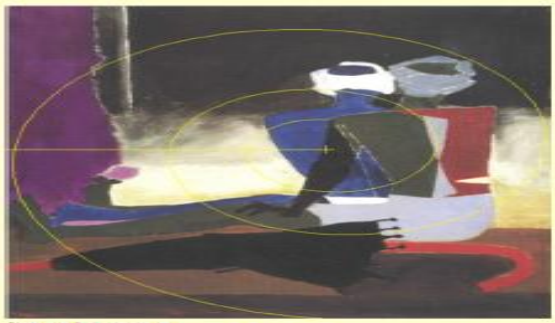

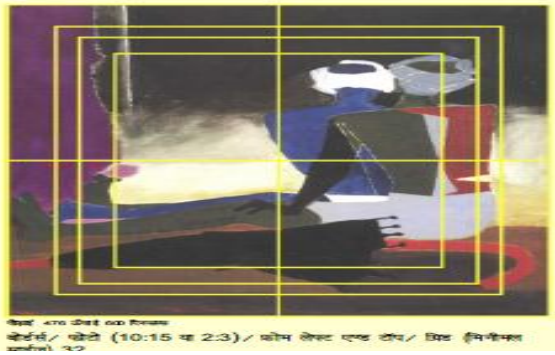

उनके चित्रों की नग्न नारी आकृतियों के प्रश्न पर वे कहते हैं कि उनके चित्रों की नग्न नारी के प्रति मन्दिर कला का भाव है।[11] एम.एफ. हुसेन पशु–अंकन के लिए भी अत्यधिक प्रसिद्ध रहे हैं विशेष रूप से अश्वांकन उनका प्रिय विषय रहा हैं उन्होंने अश्वों को विषय बनाकर अनेक चित्र बनाए। इसके अतिरिक्त हाथी, गाय और बैलों की आकृति को अधिक एवं भिन्नता के साथ प्रदर्शित किया। जब वे साठ के दशक के शुरूआत में ग्रामीण परिवेश के चित्र बना रहे थे तो गाय–बैल की आकृति पर अधिक जोर दे रहे थे। उनके चित्रों में गाय–बैलों की संख्या से आतंकित होकर किसी ने कहा था कि ''इतने बैल तो सारे हिन्दुस्तान में भी नहीं गिने जा सकते हैं।''[12]

एम. एफ. हुसेन के अनुसार उनके चित्र परम्परा की ही फिर से खोज हैं। दर्शक को अपने सम्मोहन में ग्रिड पृष्ठभूमि से बांध लेने वाली एम.एफ. हुसेन की आकृतियाँ – हाथी, घोड़े, बंदर– मध्ययुगीन मूर्तिकला की पुनर्व्याख्याएँ है। ''मैंने इन जंगली जानवरों को जंगल में नही देखा है। मैंने इन्हें खजुराहो, कोर्णाक, महाबलिपुरम्– हिन्दुस्तान के मध्ययुगीन मंदिरों की दीवारों पर पत्थरों में कैद देखा है और मेरी तमाम आकृतियाँ, चाहे वे स्त्रियों की हो या वन्य पशुओं की, इन्हीं पत्थरों की प्रेरणाएँ है। मैंने इन्हें खुद इनके आकारों से मुक्त किया हैं मेरा विश्वास है कि कोई भी 'कलारूप' (आर्ट फॉर्म) अपने से पहले के किसी कला रूप से ही पैदा होता हैं पिछली चित्रकला से नई चित्रकला पैदा न हो, लेकिन मूर्तिकला से नई चित्रकला, पिछले संगीत से नई कविता और पिछले काव्य से नए चित्र, या ठीक इसके विपरीत, पैदा होते हैं– मध्ययुग की चित्रकला इसका प्रमाण है जो भक्ति काव्य से पैदा हुई थी।[13] उनके प्रतीक और अभिप्राय भी सामाजिक परम्पराओं औरा पौराणिकताओं से लिए गए हैं। सिर पर झूलता हुआ लालटेन, जंघा पर बैठा हुआ बाग, झूलती हुई मकड़ी, काला चाँद, अपनी छाया फेंकता हुआ वेगवान अश्व, स्वास्तिक, चेहरे के सामने बनी हथेली, उड़ता हुआ साँप आदि। एम. एफ. हुसेन के प्रतीक बदलते जाते हैं ओर प्रतीकों के साथ चित्रित सतह की रंग ग्रिड योजनाएँ भी बदलती जाती हैं। सन् 1960 के बाद एम. एफ. हुसेन की दुनिया के विषय नृत्य, संगीत, घोड़े, हाथी, चन्द्रमा पर मनुष्य का पहुँचना, महात्मा गाँधी, आपात्काल, मदर टेरेसा, माधुरी दीक्षित आदि रहे हैं।

एम. एफ. हुसेन ने साधारण लोगों के असाधारण चित्र ही नहीं बल्कि असाधारण लोगों के साधारण चित्र भी बनाए हैं जैसे कि जवाहरलाल नेहरू, राम मनोहर लोहिया, लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गाँधी आदि। आपात्कालके समय तत्कालीन प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी के चित्र बनाए जिसमें उन्होंने उनको दुर्गा के रूप में चित्रित किया। उन्होंने मदर टेरेसा (चित्र सं.– 00) के मानवतावादी दर्शन और आचरण से प्रभावित होकर उन पर भी एक सुन्दर चित्र श्रृंखला बनाई जिसे सन् 1980 में टाटा सेन्टर, कलकत्ता में प्रदर्शित किया गया। इन चित्रों मे मदर टेरेसा का चेहरा चित्रित नहीं है। सभी चित्रों में एक सफेद साड़ी, स्याह पृष्ठभूमि, साड़ी की बार्डर पर नीले रंग की दो धारियाँ हैं और इस साड़ी की सलवटों में छुपे, ढके, इधर–उधर छोटे यतीम बच्चों की झलक है। इस श्रृंखला

में उन्होंने मदर टेरेसा के स्नेह, ममत्व, सेवा और मातृत्व–भावना को उभारने की चेष्टा की है।

इसके बाद उन्होंने 'सरस्वती' श्रृंखला चित्रित की जिसमें सरस्वती को नग्न चित्रित किए जाने पर समाज द्वारा काफी विरोध हुआ जिसका असर अभी तक है। कुछ समय पहले अहमदाबाद की हुसेन जोशी गुफा में भूपेन खक्कर के चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन एम.एफ. हुसेन को बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने नहीं करने दिया। इससे पहले एम. एफ. हुसेन के विश्वविख्यात 'थ्योरामा' के चित्रों और पुरानी टेपेस्ट्री चित्रों को वे काफी नुकसान पहुँचा चुके हैं। थ्योरामा में 12 फीट से लेकर 40 फीट लम्बे चित्र भी हैं जो संस्कृति के इतिहास को पेश करते हैं। एम. एफ. हुसेन इसके बारे में 'लेट हिस्ट्री कट एक्रास मी विद्आउट मी' कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ में वर्जित सेब के गिरने से शुरू होकर इस चित्र श्रृंखला में विभिन्न समस्याओं से होते हुए 'नेहरू के आधुनिक भारत' तक के चित्र हैं। विशाल चित्रों की इस श्रृंखला को देखकर एम. एफ. हुसेन की ऊर्जा का अंदाजा लगाया जा सकता है। एम.एफ. हुसेन किसी भी बड़ी घटना से प्रभावित होकर तत्काल अपनी टिप्पणी चित्रों के माध्यम से करते हैं। जैसे कि चन्द्रमा पर मनुष्य के पहुँचने से शुरू होकर तूफान जैसी भयानक घटनाओं को तुरन्त अपनी कला में प्रतिक्रिया देते हैं। वह हमेशा नवीनता की तलाश में रहते हैं।

फरवरी 1992 में टाटा सेन्टर कलकत्ता में एम. एफ. हुसेन ने सार्वजनिक रूप से छः कैनवासों का चित्रण किया। उन्होंने पिछले 40 वर्षों का निचोड़ इन छः कैनवासों में चित्रित करने का प्रयास किया। जिसे छः देवियों– दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती और मरियम के द्वारा चटक रंगों में चित्रित किया और छठे दिन उन छः कैनवासों पर सफेद रंग पोत दिया। इसकी व्याख्या करते हुए कहा कि, ''जैसे दुर्गा पूजा के बाद मूर्तियों का गंगा में विसर्जन या समुद्र में गणपति का विसर्जन किया जाता है।[14] एम. एफ. हुसेन को चित्रण के साथ–साथ संगीत, कविताओं और फिल्मों में भी रूचि रही है। वे अँगरेजी में कविताएँ लिखते हैं व शायरी भी करते हैं। मुक्ति बोध उनके प्रिय कवि रहे हैं। लेकिन अधिक लगाव फिल्मों में रहा है। एम. एफ. हुसेन कई फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। सन् 1968 में एम. एफ. हुसेन की लघु फिल्म ''थ्रू द आइज़ ऑव ए पेन्टर'' को बर्लिन फिल्म महोत्सव में गोल्डन बियर पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। एम. एफ. हुसेन एक साक्षात्कार में कहते हैं, ''मैं तो शुरू में मुम्बई में आया इसलिए था कि फिल्मकार बनूं। मुणे गोदार, त्रुको, बुनुएल बर्गमैन, सत्यजीत राय और रोजीलिनी की फिल्मों ने बड़ा प्रभावित किया है। मेरी (हुसेन) कला के प्रेरणा स्त्रोतों में फिल्म और संगीत माध्यम महत्वपूर्ण रूप में रहे हैं। इन दिनों जब मैं यूरोप जाता हूँ तो मैं कला गैलरियों में नहीं जाता, फिल्म, रंगमंच, संगीत–समारोहों की दुनिया में भटकता हूँ। मेरी कला पर फिल्म का बहुत अधिक प्रभाव है। स्वयं के विषय में एम. एफ. हुसेन कहते हैं, ''मैं घोड़े बेचता हूँ, फिल्में बनाता हूँ।

एम. एफ. हुसेन को उत्कृष्ट कृतित्व के लिए अनेक बार पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1966 में पद्मश्री, सन् 1973 में पद्मभूषण और सन् 1978 में ललित कला अकादमी की रत्न सदस्यता से सम्मानित किया गया। उनके चित्रों पर कई फिल्में बन चुकी हैं। सन् 1957 में प्रसिद्ध इटेलियन फिल्म निर्देशक राबर्टो शेसेलिनी भारत पर फिल्में बनाने आए थे पर एम. एफ. हुसेन के चित्रों को देखा तो उन्हें जैसे हिन्दुस्तान मिल गया और उन्होंने उनके चित्रों पर एक फिल्म बनाई। इसके बाद उनके चित्रों पर अनेक फिल्में बनाई जा चुकी हैं। जो ख्याति पिकासों को प्राप्त है वही एम. एफ. हुसेन को भारत में दिल खोलकर मिली है। सन् 1971 में साओं पाउलो द्वैवार्षिकी में उन्हें पिकासो के साथ विशिष्ट कलाकार के रूप में आमंत्रित किया गया और उनकी 'महाभारत' श्रृंखला के तीस चित्र पिकासो के चित्रों के साथ प्रदर्शित हुए। उनके चित्र देश–विदेश के अनेक संग्रहालयों एवं निजी संग्रहों में संग्रहीत हैं। उनके स्वयं के कार्यों पर चार संग्रहालय निर्मित हो चुके हैं। पहला सन् 1989 में 'हुसेन श्रृंखला' कोरामंगला बैंगलोर में, दूसरा दिल्ली के पास 'हुसेन की सराय', तीसरा सन् 1994 में 'हुसेन गुफा' या 'अमदावादिनी गुफा' अहमदाबाद में, चौथा म्यूजियम 'आर्ट और सिनेमा पर केन्द्रित रंगमहल'। इस प्रकार एम.एफ. हुसेन विगत लम्बे समय से चर्चा में रहे हैं। कभी अपने चित्र कर्म में राजनीतिक व्यक्तियों को लेकर, कभी राज्य सभा के सदस्य के रूप में, कभी अपने चित्रों की सर्वाधिक कीमत वसूल करने के सिलसिले में तो कभी नंगे पांवों चलने के कारण, कभी माधुरी के सौन्दर्य के प्रति दीवानगी के लिए तो कभी देवी–देवताओं के नग्न चित्रण करने के लिए। पर कला कर्म उन्होंने कभी नहीं छोड़ा। निरन्तर कला साधना में वे अपने सभी समकालीन कलाकारों में आगे निकल गए। 90 वर्ष में से अधिक आयु प्राप्त करने के बाद भी वे एक सजग,जिज्ञासु एवं सक्रिय कलाकार और निरन्तर नवीनता के लिए प्रयासरत था।

**उद्देश्य**

एम. एफ. हुसेन ने विभिन्न रूपों को कुछ घटनाएँ, कुछ सम्बन्ध, कुछ घुमक्कडी, कुछ मौजमस्ती, कुछ अकेलापन यह सब एक सूत्र में रच–बस कर कैसे एक बडे, विभिन्न श्रंखलाओं और ग्रिड संरचना के माध्यम से उभार कर रचनात्मक जीवन का अन्तहीन आमद करते है, यह एम. एफ. हुसेन का अध्ययन करके जाना जा सकता है। जो लोग हुसेन को निकट से नहीं जानते है, वे भी उसे पढ़ कर एक शीष स्थानिय व्यक्तित्व से अपनी सहज नजदीकी महसूस कर सकते है।

**निष्कर्ष**

यह हुसेन के एक जीवन की कहानी नहीं है। यह हुसेन द्वारा बनाये चित्रो–रूपो को ग्रिड संरचना और विभिन्न श्रंखलाओं को हुसेन द्वारा चित्रांकन और जिए गए और जिए जा रहे, कई–कई जीवनों की अनगिनत कहानियाँ है। समानता केवल एक ही है–ग्रिड संरचना और रचनात्मक बिखराव।

किसी एक जीवन में सबसे अधिक रंगो को उनके मूल में पहचाना जा सकता है तो वह निसन्देह हुसेन ही है। एक ऐसी रचना–प्रकिया, जो सोते–जागते,

देखते–सुनते, कहते–करते सतत् चलती रहती है। विश्व में ऐसे इक्का–दुक्का लोग होते है, जिनके जीवन में उनकी सॉस रचनात्मकता से अधिक अहमियत रखती है, हुसेन उनमें से एक है। दो बार राज्य सभा सांसद रह चुके, हुसेन सही मायनें में कच्चे खिलाड़ी नहीं है। वे माधुरी को अपनी 'माँ अधूरी' कहते है तो तब्बू के साथ अपनी नयी फिल्म भी बनाने का रचनात्मक जोखिम ले सकते है। हम सब को पता है कि हुसेन अपने पूरे परिवारिक, सामाजिक, व्यवसायिक और राजनीतिक जीवन में केवल चंचल, शोख और विन्दास व्यक्तित्व की तरफ ही दिखते है। उनका यह अध्ययन उनके उस व्यक्तिव्य की तरफ भी इंगित करती है जहॉ उनका अकेलापन, उनकी उदासी, रचनात्मक एकान्तिक जीवन कब और कैसे बीता, जिसकी बदौलत हुसेन आज हमारे समकालीन ही नहीं चित्रकला के एक ऐसे आर्दश भी बना चुके है जिनकी थोड़ी–सी भी छाया आकृति मूलवन चित्रकार ही नहीं, अमूर्त चित्रकार भी जीना चाहते है। ऐसे हूसेन चित्रकार को पढ़ना है जो भारतीय मूल के लिए अब सदियों बाद ही शायद सम्भव पाएगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. हुसेन एम. एफ., 'एम. एफ. हुसेन की कहानी अपनी जुबानी' पृष्ठ 36–37
2. मनमोहन सरल, कला क्षेत्र, पृष्ठ 20
3. तुली नवली,'कन्टेम्परेरी इण्डियन 'पेंन्टिग्स', पृष्ठ 309
4. वाजपेयी राजेन्द्र, 'मॉडर्न आर्ट और भारतीय कलाकार', पृष्ठ 81
5. वाजपेयी राजेन्द्र, 'मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार', पृष्ठ 83
6. ए. एस. रमन : समकालीन कला : (ललित कला पत्रिका) नई दिल्ली, 1986, पृ. 5
7. जगदीश गुप्त : समकालीन कला : (ललित कला पत्रिका) नई दिल्ली, 1985, पृ. 13
8. ए. एस रमन : समकालीन कला : (ललित कला पत्रिका) नई दिल्ली, 1986, पृ. 14
9. गौरीशंकर कपूर : समकालीन कला : (ललित कला पत्रिका) नई दिल्ली, 1986, पृ. 9
10. कपूर एस.एस.,'हुसेन', ललित कला अकादमी, दिल्ली,
11. भारद्वाज विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ 93
12. भारद्वाज विनोद, वही पृष्ठ 94
13. भारद्वाज विनोद, वही पृष्ठ 426
14. सरल मनमोहन, 'कला क्षेत्र', पृष्ठ 21